



## एक साथ चुनाव की व्यावहारिकता

[drishtilas.com/hindi/printpdf/practicality-of-simultaneous-election](http://drishtilas.com/hindi/printpdf/practicality-of-simultaneous-election)

### एक साथ चुनाव की व्यावहारिकता

#### एक साथ चुनाव की आवश्यकता क्यों

चुनावों के खर्च में कमी आएगी, सार्वजनिक धन की बचत होगी।

काले धन तथा भूद्याचार पर लगाम लगेगी।

सार्वजनिक जीवन के व्यवधान में कमी आएगी।

प्रशासनिक सेटअप और सुरक्षा बलों पर भार कम होगा।

सरकार की नीतियों का समय पर कार्यान्वयन सुनिश्चित हो सकेगा।

प्रशासनिक मशीनरी चुनावी गतिविधियों में संलग्न रहने के बजाय विकासात्मक गतिविधियों संलग्न हो सकेंगी।

मतदाता सरकार की नीतियों और कार्यक्रमों को राज्य और केंद्रीय दोनों स्तरों पर परख सकेंगे।

मतदाताओं को यह जानने में आसानी होगी कि किस राजनीतिक दल ने क्या बाएँ किये थे और वह उन पर कितना खरा उतारा।

इसके लिये संविधान में संशोधन करना होगा।

लॉजिस्टिक के स्तर पर वर्तमान में ईवीएम तथा वीवीपैट की संख्या अपर्याप्त।

बड़ी संख्या में चुनावी एजेंटों को प्रशिक्षित करना कठिन।

अवसंरचनात्मक मुविधाएँ भी पर्याप्त नहीं।

इनी बड़ी संख्या में EVM और VVPAT मशीनों को सुरक्षित रखना भी एक बड़ी चुनौती होगा।

मतदान कर्तियों के साथ बेहतर और चाक-चौंबंद सुरक्षा व्यवस्था की आवश्यकता होगी।

#### आगे की राह

#### विपक्ष में तर्क

वर्तमान स्थिति में एक साथ चुनाव करना संभव नहीं।

पहले अवसंरचना तथा लॉजिस्टिक की स्थिति को सुदृढ़ किया जाना चाहिए।

अन्य चुनाव सुधारों को पहले लागू किया जाना, जिनमें शामिल हैं—

जनप्रतिनिधित्व कानून में सुधार

कालेधन पर रोक

राजनीति में बढ़ते अपराधीकरण पर रोक

लोगों में राजनीतिक जागरूकता पैदा करना

देश के संघीय ढांचे के विरुद्ध।

इससे बहुत-सी विधानसभाओं के कार्यालय को उनकी मर्जी के खिलाफ घटाया या बढ़ाया जा सकेगा— राज्यों की स्वायत्ता प्रभावित।

राज्य मुद्दों के सामने क्षेत्रीय मुद्दों के गौण हो जाने की संभावना।

इस चुनाव अवधि में राजनीतिक शून्यता की स्थिति उत्पन्न हो सकती है।

जनप्रतिनिधियों के निरंकुश होने की संभावना।